जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वक्ता का सबसे बड़ा और मौलिक गुण है - सत्य के प्रति सच्ची जिज्ञासा और अनुभूत सत्य की प्रामाणिक अभिव्यक्ति।

वर्ष : 24 | जनवरी (द्वितीय) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक : 18 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 25 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, शीतकालीन आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं 170 तीर्थंकर विधान सानन्द सम्पन्न

कुराबड़ (उदयपुर) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 25 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 23 से 28 दिसम्बर 2001 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सोहनलाल हीराचन्दजी कुरावत परिवार द्वारा श्री 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.पण्डित यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी दोशी परतापुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित विपुलजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित हेमन्तजी शास्त्री उदयपुर आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों, कक्षाओं एवं व्याख्यानमालाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

अधिवेशन के प्रथम दिन झण्डारोहण श्री रंगलालजी मेहता परिवार कुराबड़ द्वारा एवं शिविर का उद्घाटन श्री पंकज नानालालजी भगनोवत परिवार जयपुर द्वारा किया गया।

24 दिसम्बर को श्री कन्हैयालालजी दलावत की अध्यक्षता में श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर का वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ; जिसमें समिति एवं फैडरेशन द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार एवं उत्कृष्ट सेवाओं हेतु अभिनन्दन किया गया।

समिति के मंत्री सुजानमलजी ने समिति द्वारा 32 गाँवों में चलाये जा रहे चल शिक्षण-शिविरों की प्रगति एवं उपलब्धि की जानकारी दी, कोषाध्यक्ष ने समिति का आर्थिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सभा का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 25 दिसम्बर को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई द्वारा डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर शोधकार्य (पीएच.डी.) के लिये डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर को 10 हजार रुपये की सम्मान राशि से सम्मानित किया गया। ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ट्रस्ट की स्थापना, उद्देश्य एवं गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुये डॉ. भारिल्ल की कृतियों पर शोध कार्य करनेवाले छात्रों को दो वर्ष तक 500/- प्रतिमाह की छात्रवृत्ति एवं शोधकार्य पूर्ण हो जाने पर 10 हजार रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की।

इसी अवसर पर फैडरेशन द्वारा तत्त्ववेत्ता : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रधान सम्पादक ब्र. यशपालजी जयपुर का उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिये सम्मान किया गया।

दिनांक 26 दिसम्बर को डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल अजमेर की अध्यक्षता में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रान्त का प्रान्तीय अधिवेशन हुआ; जिसमें राजस्थान प्रदेश में संचालित फैडरेशन की विभिन्न शाखाओं के कार्यों एवं उपलब्धि की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 27 दिसम्बर को श्री अखिल बंसल की अध्यक्षता में दो सत्रों में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रथम सत्र में सम्पूर्ण भारत से समागत फैडरेशन शाखाओं के प्रतिनिधियों तथा मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात प्रान्त के प्रान्तीय पदाधिकारियों ने अपने-अपने कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

अधिवेशन के द्वितीय सत्र में फैडरेशन की विभिन्न शाखाओं के विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं, विशिष्ट प्रान्तीय पदाधिकारियों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया; जिसकी विस्तृत जानकारी अगले अंक में प्रकाशित की होगी।

अन्त में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल बंसल ने अपने उद्बोधन में फैडरेशन की स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष के अवसर पर इस वर्ष को संगठन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बताते हुये इसे संगठन वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की। साथ ही साथ फैडरेशन द्वारा वर्षभर मनाये जानेवाले कार्यक्रम की घोषणा भी की गई, जिसकी विस्तृत कार्य सूची सभी शाखाओं को पृथक से भेजी जा रही है। 4 शाखाओं से प्रारंभ इस संगठन की आज देश-विदेश में 320 से भी अधिक सक्रिय शाखायें है। इससे फैडरेशन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का आंकलन किया जा सकता है। अन्त में 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' आत्मगीत के साथ सभा का समापन हुआ।

अन्तिम दिन विशाल शोभायात्रा निकाली गई। आयोजन में लगभग 12-13 सौ युवा साथियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में लगभग 30 हजार रुपये का साहित्य एवं 15 हजार रुपये के कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

इस अवसर पर 50 'तत्त्ववेत्ता : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ बिके एवं कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण-समिति उदयपुर ने अपनी ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ पुन: प्रकाशित करने की घोषणा की। ■

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(92 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

आजकल महाविदेह क्षेत्र में श्री सीमंधरस्वामी आदि 20 तीर्थंकर विराजमान हैं; इसीप्रकार केवली भगवंतों के टोले के टोले वहाँ विराजमान हैं, वहाँ तीर्थंकरों और केवली भगवंतों का कभी विरह नहीं होता है। आत्मा के असंख्य प्रदेशों में उन्हें अनंत चैतन्य दीपक प्रकट हो गये हैं। ऐसे अनंत अनंत जिनेश्वरों ने इस शुद्ध रत्नत्रय की भक्ति करनेवाले श्रमणों तथा श्रावकों को निर्वाण भक्ति कही है। स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान-स्थिरतारूप शुद्ध रत्नत्रय की आराधना ही मुक्ति की भक्ति है अर्थात् उसके द्वारा ही मुक्ति होती है - ऐसा जिनदेव कहते हैं। ऐसे शुद्ध रत्नत्रय की भक्ति करनेवाले श्रमण और श्रावक ही वास्तव में भक्त हैं।

शास्त्रकार आचार्य भगवंतों ने और टीकाकार मुनिवरों ने परमागम के पन्ने-पन्ने पर जिस अनुभव सिद्ध परमसत्य को पुकारा है, उसका सार इसप्रकार है।

हे जगत के जीवों ! तुम्हारे सुख का एकमात्र उपाय परमात्मतत्त्व का आश्रय है। सम्यग्दर्शन से लेकर सिद्धिपर्यंत सर्वभूमिकायें उसी में समाहित हैं । परमात्म तत्त्व का जघन्य आश्रय सम्यग्दर्शन है। वह आश्रय मध्यम कोटि की उग्रता से धारण करने पर जीव को देश-चारित्र, सकल चारित्र इत्यादि दशायें प्रकट होती हैं और पूर्ण आश्रय होने पर केवलज्ञान और सिद्धत्व पाकर जीव सर्वथा कृतार्थ होता है। इसप्रकार परमात्मतत्त्व का आश्रय ही सम्यग्दर्शन है, वही सम्यग्ज्ञान है, वही सम्यग्चारित्र है, वही सत्यार्थ प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, आलोचना, प्रायश्चित्त, सामायिक, भक्ति, आवश्यक, समिति, गुप्ति, संयम, तप, संवर, निर्जरा, धर्म, शुक्लध्यान इत्यादि सभी कुछ है। ऐसा एक भी मोक्ष के कारणरूप भाव नहीं है, जो परमात्मतत्त्व के आश्रय से अलग होता है। परमात्मतत्त्व के आश्रय से अन्य - ऐसे भावों को (व्यवहार प्रतिक्रमण, व्यवहार प्रत्याख्यान इत्यादि शुभ विकल्परूप भावों को) मोक्षमार्ग कहा जाता है; परन्तु वह उपचार से कहा जाता है। परमात्मतत्त्व के मध्यम कोटि के अपरिपक्व आश्रय के समय में उस अपरिपक्वता के कारण साथ-साथ जो अशुद्धि रूप अंश विद्यमान होता है, वह अशुद्धिरूप अंश ही व्यवहार प्रतिक्रमण आदि अनेक-अनेक शुभविकल्पात्मक भावोंरूप दिखाई देते हैं। वह अशुद्धि का अंश वास्तव में मोक्षमार्ग से विरुद्धभाव ही है, ऐसा समझना।

तथा द्रव्यलिंगी मुनि को जो प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान आदि शुभभाव होते हैं,वे भाव तो प्रत्येक जीव अनन्त बार कर चुका है; परन्तु वे भाव उसे केवल परिभ्रमण के ही कारण हुये हैं; क्योंकि परमात्मतत्त्व के आश्रय बिना आत्मा का स्वभाव परिणमन आंशिकरूप से भी नहीं होने से उसे मोक्षमार्ग की प्राप्ति अंशमात्र भी नहीं होती है। सर्व जिनेन्द्रों की दिव्यध्वनि का संक्षेप और हमारे स्वसंवेदन का सार यह है कि भयंकर संसार रोग एकमात्र औषध परमात्मतत्त्व का आश्रय ही है। जबतक जीव की दृष्टि ध्रुव अचल परमात्मतत्त्व के ऊपर न पड़कर क्षणिकभावों पर रहती है, तबतक अनंत उपाय करने पर भी शुभाशुभ विकल्प शमित नहीं होते हैं; परन्तु जहाँ उस दृष्टि को परमात्मतत्त्वरूप ध्रुव आलंबन हाथ लगता है,तब उसी क्षण जीव (दृष्टि अपेक्षा से) कृतकृत्यता अनुभव करता है और उसी अपेक्षा से विधि-निषेध विलय पाता है, अपूर्व समरस भाव का वेदन होता है, निजस्वभावरूप परिणमन प्रारंभ होता है। **(क्रमशः)**

सम्पादकीय

क्षत्रचूड़ामणि : एक परिशीलन

(गतांक से आगे.....)

धर्माराधना करने से क्या-क्या नहीं मिलता। कहा भी है न –

जाँचे सुरतरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
बिन जाँचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख देन।।

इसीतरह आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म भावनाओं का चिन्तन-मनन करते हुए महाराज जीवन्धरस्वामी का चित्त बोधिदुर्लभ एवं धर्म भावना में विशेषरूप से रम गया। वे सोचते हैं –

भव्यत्वं कर्मभूजन्म, मानुष्यं स्वंगवंश्यता।
दुर्लभं ते क्रमादात्मन् समवायस्तु किम्पुनः।।

हे आत्मन् ! रत्नत्रय धर्म और साधना के साधनभूत भव्यपना, मनुष्यपर्याय, सुन्दर स्वस्थ शरीर और अच्छे कुल में उत्पत्ति – इनमें एक-एक का पाना अति दुर्लभ है और तेरे पुण्योदय से तुझे पाँचों सुलभ हो गये हैं, फिर भी यदि धर्म में रुचि नहीं हुई तो यह सब व्यर्थ ही है।

धर्मभावना में वीतराग धर्म के स्वरूप का चिन्तन करते हुए महाराजा जीवन्धर सोचते हैं कि – वस्तुतः तो वह निश्चय रत्नत्रय ही धर्म है, जिसमें 'वस्तु स्वातंत्र्य' के सिद्धान्त के द्वारा कारण परमात्मा के रूप में भगवान आत्मा की अनंत शक्तियों और अनन्तगुणों की स्वतंत्र सत्ता को बोध कराया गया है तथा आत्मा का पर में एकत्व-ममत्व एवं पर के कर्तृत्व-भोक्तृत्व से भेदज्ञान कराया गया है। ऐसे धर्म के धारक और आराधक पशु भी अपनी पामर पर्याय छोड़कर स्वर्ग को प्राप्त करते हैं और जो ऐसे धर्म को नहीं जानते, ऐसे वीतराग धर्म की आराधना नहीं करते, वे देव पर्याय से मरकर कुत्ते जैसे हीन पशु की पर्याय में चले जाते हैं। अतः हमें सदैव वीतराग धर्म की ही आराधना करना चाहिए।

इसतरह 12 भावनाओं का चिन्तवन करने से जीवन्धरकुमार के वैराग्य में और भी अधिक वृद्धि हुई। फलस्वरूप वे गृहविरत होकर आत्मसाधना में तत्पर हो गये और कुछ काल बाद वे केवलज्ञान प्राप्त कर अजर-अमर सिद्धपद को प्राप्त हो गये। जो भी व्यक्ति इस 'जीवन्धरचरित्र' अपर नाम 'क्षत्रचूड़ामणि' का मन लगाकर अध्ययन-मनन-चिन्तन करेंगे, उनका लौकिक जीवन तो उज्ज्वल होगा ही, पारलौकिक जीवन भी मंगलमय हो जायेगा। शुभमस्तु!

पाठक इस ग्रन्थ से अधिकाधिक लाभान्वित हों – इस आशा और अपेक्षा के साथ विराम लेता हूँ। ●

अपूर्व अवसर ! 卐 श्री नेमिनाथाय नमः 卐 महा महोत्सव !!

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव, खनियांधाना

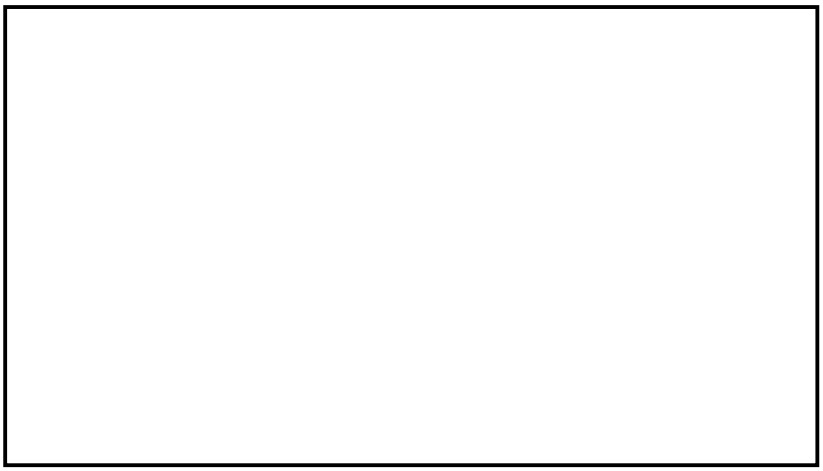

मंगलवार, दिनांक 19 फरवरी से सोमवार 25 फरवरी 2002 तक

अत्यंत आनंद एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि आध्यात्मिक धर्मनगरी खनियांधाना में निर्मित भारतवर्ष के अनुपम व अद्वितीय पंचमेरु नंदीश्वर जिनमंदिर में विराजमान होने वाले 164 अकृत्रिम जिनबिम्ब, अंतर्मुखी मनोज्ञ धवल पाषाण प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा हेतु श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव के विधिनायक 1008 श्री नेमिनाथ भगवान होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निजकल्याणार्थ सपरिवार तथा इष्ट मित्रोंसहित पधारकर धर्मलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

विशिष्ट विद्वत्समागम	प्रतिष्ठाचार्य	निर्देशक
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर पं. विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना	बाल ब्रह्मचारी पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना **सह-प्रतिष्ठाचार्य** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा	बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री **सह-निर्देशक** पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया

संपर्क-सूत्र - श्री नन्दीश्वर दि. जिनमंदिर चेतनबाग, खनियांधाना, जिला - शिवपुरी 473990 (म.प्र.)
फोन - (07497) 35474, 35450, फैक्स - 35539

नोट - आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन पधार रहे हैं, इसकी सूचना अवश्य दें, जिससे आपके आवासादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पधारिये .. !

!! श्री म

श्री 1008 शीतलनाथ भगवान के गर्भ, जन्म, तप कल्याणक से सुशो

श्री यूनेस्को एवं भारत सरकार द्वारा घोषित अहिंसा वर्ष में

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

(सोमवार, दिनांक 11 फरवरी से

कार्यक्रम स्थल : निर्माणाधीन श्री शीतलनाथ दि.

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि आध्यात्मिक धर्मनगरी भद्दलपुर (उदयगिरी) वि
किया जा रहा है। इस अवसर पर जैन बड़ामंदिर अंदर किला विदिशा में नवनिर्मित चौबीसी, प्रथम केवल
प्रतिमायें तथा भद्दलपुर नसियां में 18 फुट ऊँची श्री 1008 शीतलनाथ भगवान की अन्तर्मुखी भाववाही
नेमिनाथ भगवान होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निज क

पावन सान्निध्य

परमपूज्य 108 श्री निर्वाणसागरजी महाराज

विशिष्ट विद्वत्समागम

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', कोटा
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
वाणीभूषण पं. ज्ञानचंदजी, विदिशा

प्रतिष्ठाचार्य

पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, जेवर

सह-प्रतिष्ठाचार्य

पण्डित किशोरजी शास्त्री, बैंगलोर
पण्डित चिदानन्दजी, अशोकनगर
पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर
पण्डित अशोकजी मांगुलकर, राघौगढ़
पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री, जबलपुर

नि
स

बाल

पंच
रत्
स्व
रज

नेमिकुमार के माता-पिता
श्रीमती विजय डॉ.महेन्द्रकुमार जैन

कुबेर
डॉ. मक्खन जैन
श्रीमती मनोबाला

अध्यक्ष
मलूकचन्द जैन
(खेरूआवाले)

उपाध्यक्ष
सिंघई ऋषभकुमार बड़कुल
37393

महामंत्री
चक्रवती एडवोकेट
32369

मंत्री
रविप्रकाश पटेल
30499

सौधर्म इन्द्र
डॉ. आर. के. जैन एवं
श्रीमती सुषमा

पंचकल्याणक समिति सदस्यगण – वीरेन्द्रकुमार, मानपुरवाले, सेठ दीपककुमार जैन, संजयकुमार करैयावाले, सुरेन्द्रकुमार

विनीत : श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, भद्दलपुर (उदय

निवेदक : श्री दिग. जैन समाज विदिशा, **आयोजक** : श्री शीतलनाथ दि. जैन बड़ा मंदिर, विदिशा - फोन - 3222

नोट – कृपया इस विज्ञापन को जहाँ से स

हावीराय नम: !!

अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!!

भित ऐतिहासिक धर्मनगरी अतिशय क्षेत्र भद्दलपुर (उदयगिरी) विदिशा में

भगवान महावीर के 2600 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, 17 फरवरी 2002 तक)

जैन नसिया, भद्दलपुर (उदयगिरी) विदिशा (म.प्र.)

विदिशा (म.प्र.) में श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन
ी अनंतवीर्य, भगवान शीतलनाथ एवं अंतिम केवली जम्बूस्वामी की अन्तर्मुखी भाववाही मनोज्ञ पाषाण
मनोज्ञ प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी। महोत्सव के विधि-नायक श्री1008
ल्याणार्थ सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारकर एवं धर्मलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

र्देशक – पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर
ह निर्देशक – पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर
पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर

तीर्थंकर का जन्माभिषेक कर निम्न पुण्यलाभ अवश्य लेवें

रत्न कलश	11,111/-	**नेमि कलश**	1,111 /-
नजड़ित कलश	7,111/-	**भावना कलश**	501/-
र्ण कलश	5111/-	**घटयात्रा (वेदी शुद्धि हेतु)**	
त कलश	2511/-	**वंदना कलश**	201/-

कोषाध्यक्ष
सिंघईप्रकाशचंदजी
30390

स्वागताध्यक्ष
पं.मुकेश शास्त्री
32234

फैडरेशन अध्यक्ष
पं.विनोद शास्त्री
36861

फैडरेशन महामंत्री
चिन्मय बडकुल
32466

पेपरईवाले, राजेशकुमार जैन, अनिलकुमार जैन
गिरी), विदिशा - फोन-32841

22, **सहयोगी :** अ. भा. जैन युवा फैडरेशन विदिशा

मांगलिक कार्यक्रम

11 फरवरी 2002 – जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्वजारोहण, विधान

12 फरवरी 2002 इन्द्रप्रतिष्ठा विधि, श्री याग मण्डल विधान, गर्भकल्याणक के 6 माह पूर्व इन्द्रसभा व राजसभा।

13 फरवरी 2002 – **गर्भकल्याणक** – 16 स्वप्न फल, माता व अष्ट देवियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा, जिनमंदिर में वेदी-कलश-ध्वजशुद्धि, शोभायात्रा।

14 फरवरी 2002 – **जन्मकल्याणक** – बालक नेमिकुमार के जन्म-कल्याणक पर इन्द्रों व राजाओं द्वारा आनंदवर्द्धक कार्यक्रम, 1008 स्वर्ण-रत्नमयी कलशों से जन्म अभिषेक व पालना-झूलन।

15 फरवरी 2002 – **तपकल्याणक** – लौकान्तिक देवों द्वारा नेमिकुमार के वैराग्य की अनुमोदना, मुनि दीक्षाविधि।

16 फरवरी 2002– **ज्ञानकल्याणक** – मुनिराज नेमिनाथ को आहार दान विधि, केवलज्ञान प्राप्ति, समवशरण रचना एवं दिव्यध्वनि प्रसारण।

17 फरवरी 2002– **मोक्षकल्याणक** – गिरनार की रचना, भगवान नेमिनाथस्वामी को निर्वाणप्राप्ति, श्रीजी विराजमान।

ब देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

प्रिय सम्पादक महोदय !

कृपया निम्न समाचार को अपने लोकप्रिय अखबार में स्थान देकर अनुगृहीत करें

भगवान महावीरस्वामी के 2600 वें जन्मजयंती वर्ष के उपलक्ष में –

जयपुर के निकटवर्ती 51 स्थानों पर विशाल धार्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

भगवान महावीरस्वामी के 2600 वें जन्म जयन्ती वर्ष के रूप में मनाये जा रहे पावन वर्ष के अवसर पर शीतकालीन अवकाश के समय दिनांक 23 से 31 दिसम्बर 2001 तक 14 वाँ विशाल ग्रुप शिविर राजस्थान के 4 जिलों के 51 स्थानों पर अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 22 दिसम्बर को दिगम्बर जैन मंदिर रूपाहेड़ी में शिविर का उद्घाटन श्री रामपालजी पाटनी काशीपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वान मंचासीन थे।

शिविर का आमंत्रणकर्त्ता कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन (म.प्र.) था।

शिविर में जयपुर, दौसा, टोंक एवं सवाई माधोपुर जिलों के 51 स्थानों पर निम्नानुसार विद्वानों ने समाज को लाभान्वित किया –

चाकसू** में पं. संजीव खड़ैरी व पं. अभिषेक रहली ***दूनी** में पं. स्वप्निल नागपुर व पं. ए. बालाजी ***निवाई (जैन नसियां)** में पं. विपिन फिरोजाबाद व पं. मनीष सिद्धान्त ***निवाई (शान्तिनाथ धर्मशाला)** में पं. आशीष टीकमगढ़ व पं. प्रयंक रहली ***निवाई (अग्रवाल मंदिर)** में पं. मनोज खड़ैरी व पं. सौरभ शाहगढ़ ***निवाई (पहाड़ी कॉलोनी)** में पं. पंकज खड़ैरीटोंक (काफला)** में पं. जितेन्द्र राठी ***टोंक (नसियां)** में पं. प्रवेश करेली ***टोंक (चन्द्रप्रभ चैत्यालय)** में पं. अमित जबेरा ***टोंक (माणक चौक)** में पं. योगेश बरा ***वनस्थली** में पं. प्रदीप दमोह ***झिलाई** में पं. नितिन कोठेकर ***बड़ागाँव** में पं. अनिल खनियांधाना ***रजवास** में पं. संतोष सावजी*** बगड़ी** में पं. संतोष मिणचे *** पराना** में पं. पुलकित कोटा ***सिवाड** में पं. मनोज अभाना व पं. नवीन अहमदाबाद ***सारलोप** में पं. सौरभ लमेटा*** लाखनपुर** में पं. किरण पाटील *** बोली** में पं. अरुण मौ व पं. कस्तूरचंद खड़ैरी***उनियारा** में पं. अनिल मुम्बई ***मित्रपुरा** में पं.प्रशांत मोहरे***अलीगढ़** में पं. राजेन्द्र खड़ैरी ***गोनेर** में पं. निकलंक कोटा*** चन्दलाई** में पं. महावीर मांगुलकर ***पीपलू** में पं. भानु खड़ैरी ***झिराना** में पं. अजित मौ ***लावा** में पं. अमोल सिंघई व पं.आशीष बिनौता *** दणाऊ** में पं. संतोष बोगार ***बस्सी** में पं. जागेश जबेरा व पं. रवीश गाँधी*** काशीपुरा** में पं. राजेन्द्र पाटील *** कोटखावदा** में पं विशाल कान्हेड ***तूंगा** में पं. चिन्मय गुढ़ाचन्दजी *** सिकन्दराबाद** में पं. सचिन पाटनी *** रूपाहेड़ी** में पं. नीरज खड़ैरी ***निमोडिया** में पं. पीयूष जयपुर ***दौसा** में पं. परेश बड़ौदिया ***बांदीकुई** में पं. विकास बानपुर *** छारेड़ा** में पं. सुधाकर इंडी ***पापड़दा** में पं. बाहुबली दादन्नवर *** माधोराजपुरा** में पं. सुदीप तलाटी *** चकवाड़ा** में पं. राजीव गुना *** चौरू** में पं. धर्मेन्द्र बड़ामलहरा *** मौजमाबाद** में पं. ऋषिराज बरा *** लवाण** में पं. जगदीश पवार व पं. नितिन भिण्ड *** बनियाना** में पं. देवेन्द्र बण्ड *** कठमाणा** में पं. चैतन्य सातपुते ***फागी** में पं. श्रेयांस जबलपुर *** लालसोट** में ब्र. कल्पनाबेन, पं. संजय बड़ामलहरा, पं. ऋषभ ललितपुर, पं. अभिनय जबलपुर आदि विद्वानों द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

* 5928 शिविरार्थी परीक्षा में सम्मिलित।
*4288 शिविरार्थी प्रौढ़ कक्षा में सम्मिलित।
* 15,000 साधर्मी भाई-बहिन लाभान्वित हुये।
* 800 जीर्ण-शीर्ण शास्त्रों को सुसज्जित किया गया।
* अनेक साधर्मियों ने नियमित स्वाध्याय की प्रतिज्ञा ली।
* 18 स्थायी वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं की स्थापना।
* अनेकों ने रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद त्याग, देवदर्शन की प्रतिज्ञा ली।
* 68 विद्वानों द्वारा 51 स्थानों पर लगातार 8 दिन अपूर्व धर्मप्रभावना।

शिविर में बालकक्षा में धार्मिक नैतिककक्षा, प्रौढ़कक्षा में छहढाला, भक्तामर, तत्त्वार्थ सूत्र तथा प्रवचनों में मोक्षमार्गप्रकाशक, समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि विषयों पर तीन-तीन समय कक्षा, प्रवचनादि हुये। प्रात: पूजन-प्रशिक्षण की कक्षा भी चली। अन्तिम दिन 5928 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा दी।

नियमित प्रवचन, पूजन, कक्षा, पूजन-प्रशिक्षण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग 15 हजार आत्मार्थियों ने जीवन में धर्मलाभ का आनन्द उठाया। इसमें प्राचीन जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता के अन्तर्गत जीर्ण-शीर्ण 800 शास्त्रों को सुसज्जित किया गया।

शिविर संयोजक पं. विजयकुमारजी गंगवाल चाकसू तथा पं. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. धर्मेन्द्रकुमारजी बण्डा, पं. नवीनकुमारजी फिरोजाबाद, पं. शिखरचन्दजी निवाई, पं. मदनलालजी गंगवाल ने शिविर के दौरान सघन दौरा कर निरीक्षण किया तथा स्थानीय समाज में जागृति हेतु निर्देश दिये। समाज के प्रत्येक वर्ग में शिविर के प्रति उत्साह देखकर उन्होंने संतोष व्यक्त किया।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन (म.प्र.), श्री तखतराजजी कलकत्ता, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री प्रेमचन्दजी अजमेर, श्री रविकुमारजी सेठी, श्री महेन्द्रकुमारजी नागदा, श्री प्रमोदजी-आलोककुमारजी जयपुर प्रिन्टर्स, श्रीमती सुलेखा शाह, डॉ. सतीश जैन, श्री शान्तिलालजी खिमलासा एवं सकल दिगम्बर जैनसमाज रूपाहेड़ी एवं अध्यक्ष विनोदकुमारजी गंगवाल का सराहनीय सहयोग रहा।

31 दिसम्बर को रूपाहेड़ी में विद्यालय मैदान में श्री कपूरचन्दजी अजमेरा की अध्यक्षता में आयोजित सामूहिक समापन समारोह में शिविर के 51 स्थानों के प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों को प्रमाणपत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जिनवाणी सज्जा व कण्ठपाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार दिये गये। इसीसमय स्थानीयस्तर पर शिविर संचालन में अपना योगदान देनेवाले शिविर प्रभारियों तथा शिविर में अध्यापन कार्य करनेवाले विद्वानों का सम्मान किया गया। विशिष्टअतिथि के रूप में ब्र.यशपालजी जैन, पं. विमलकुमारजी प्रतिष्ठाचार्य, पं. विवेकजी महाजन, पं. पद्माकरजी मंजुले पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, पं. सुखवेन्द्रजी पाटोदी, पं. प्रमोदजी, पं. पदमचन्दजी कासलीवाल, श्री लालचन्दजी अग्रवाल, श्री पदमचन्दजी दौसा, श्री तेजमलजी वकील आदि अनेक विशिष्टजनों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता का श्रेय अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन चाकसू, सकल दिगम्बर जैन समाज रूपाहेड़ी, कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति को है।

– अशोककुमार गंगवाल

तत्वचर्चा

समयसार का सार 39

& Mkñ gdepUn HkkfjYy

जिसप्रकार मंच पर यदि हाथी दिखाना है तो दो लड़कों को एक कपड़े के अंदर खड़ा करके हाथी बना देते हैं। व्यक्ति दो हैं; लेकिन एक दिख रहे हैं। इसीप्रकार जीवाजीवाधिकार में जीव और अजीव इसप्रकार दो पात्र हैं; लेकिन वे एक ही दिखते हैं।

इस सन्दर्भ में पुण्य–पाप–एकत्व–अधिकार पृथक् है; इसमें कर्म तो एक है; लेकिन वह एक ही कर्म द्विपात्रीभूय दो पात्र अर्थात् पुण्य और पाप बनकर मंच पर आया है। एक ही कर्म भला और बुरा, नायक और खलनायक इसप्रकार दो पात्र बनकर मंच पर आया है।

एक षूद्रा के उदर से एक ही साथ दो जुड़वाँ बच्चों ने जन्म लिया। एक बच्चे को उस शूद्र ने अपने घर रखा और दूसरा ब्राह्मणी को दे दिया। दोनों जुड़वाँ भाई थे, एक तो शूद्र के घर में पला और दूसरा ब्राह्मणी के घर में पला। शूद्र के घर में पला हुआ व्यक्ति ऐसा मानता है कि मैं शूद्र हूँ, हमारे घर में सबकुछ खाया–पिया जाता है; इसलिए वह माँस–मदिरा आदि का प्रतिदिन निशंक भाव से सेवन करता है। दूसरा ऐसा मानता है कि हमारे घर में इन पदार्थों को कोई छूता तक नहीं है। इसलिए वह मदिरा को छूता तक नहीं; क्योंकि वह ब्राह्मणी के घर पल रहा है।

अब यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह व्यक्ति जो ब्राह्मणी के घर पल रहा है, वह ब्राह्मण है या शूद्र ? इसप्रकार का प्रश्न मूल कलश में भी उपस्थित किया है। मूलकलश इसप्रकार है –

¼ 'kknZwyfoØhfMr ½

,dks njkÙ;tfr efnjka czkã.kRokfHkekuk]
nU;% 'kwnz% Lo;egfefr Lukfr fuR;a r;SoA
}kol;sRks ;qxiniznjkfUuxZrkS 'kwfnzdk;k%]
'kwnzkS lk{kknfi p pjrks tkfrHksnHkzes.kAA101AA

दोनों शूद्रा के पेट से एकसाथ उत्पन्न हुए हैं; लेकिन एक तो ब्राह्मणत्व के अभिमान से मदिरा को दूर से ही छोड़ देता है। उसने मदिरा तो नहीं पी; लेकिन मैं ब्राह्मण हूँ; इसप्रकार उसने ब्राह्मणत्व की मदिरा पी है। उसने 'मैं ब्राह्मण हूँ' इसप्रकार के अभिमान की मदिरा पी है; इसलिए मदिरापान नहीं करने पर भी आचार्य उसे मदिरा पीनेवाला कह रहे हैं; क्योंकि ब्राह्मणत्व के अभिमान की मदिरा भी पीने योग्य नहीं है।

वह यह नहीं मानता कि मदिरा अनिष्ट है; इसलिए मैं नहीं पीऊँ। वह तो यह मानता है कि मैं ब्राह्मण हूँ और मेरे घर में मदिरा नहीं पी जाती; इसलिए मैं मदिरा नहीं पीऊँ।

दूसरा कहता है कि मेरे यहाँ मदिरा बहुत पी जाती है; इसलिए मैं मदिरा पीता हूँ। वह ब्राह्मण मदिरा नहीं पीकर भी शूद्र ही है; क्योंकि वह शूद्रा के पेट से उत्पन्न हुआ है।

उनमें जातिभेद नहीं है; लेकिन उन्हें यह भ्रम हो गया है कि मैं शूद्र जाति का हूँ और मैं ब्राह्मण जाति का हूँ। यदि उन्हें यह भ्रम नहीं होता तो उनमें कुछ भी अंतर नहीं आता।

ऐसे ही कर्म के दो भेद हैं – एक पुण्य और दूसरा पाप। पुण्य और पाप एक ही कर्म से उत्पन्न जुड़वाँ भाई हैं। इसे हम इसी कलश के हिन्दी पद्यानुवाद से और सरलता से समझ सकते हैं–

¼ lo³;k bdrhlk ½

^nkuks tUes ,d lkFk 'kwnzk ds ?kj esa]
,d iyk okeu ds ?kjnwtk fut ?kj esaA
,d N, u e| czkã.kRokfHkeku ls]
nwtk Mwck jgs mlh esa 'kwnzHkko lsAA
tkfrHksn ds Hkze ls gh ;g vUrj vk;k]
bldkj.k vKkuh us igpku u ik;kA
iq.;&iki Hkh deZ tkfr ds tqMok Hkkbz]
nkuks gh gSa g; efä ekjx esa HkkbZAA101AA*

इसीप्रकार ये पुण्य–पाप भाव भी एक ही जाति के हैं, सगे जुड़वाँ भाई ही हैं, कर्म के ही भेद हैं, रागभाव के ही भेद हैं; तथापि अज्ञानी भ्रम से पुण्य को भला और पाप को बुरा समझते हैं। उनके इस भ्रम के निवारण के लिए ही यह अधिकार लिखा गया है।

इसे अधिक स्पष्ट समझने के लिए गुरुदेवश्री का यह उदाहरण अत्यंत उपयुक्त है।

एक व्यक्ति आत्मा को समझे बिना सारे पंचेन्द्रिय के विषयों का त्याग करके नग्न दिगम्बर मुनि हुआ। वह ऐसा मानता है कि मैं मुनि हूँ, इसलिये मैंने पंचेन्द्रिय के विषयों का त्याग किया है। वह निरंतराय आहार लेता है, 28 मूलगुणों का निर्दोष पालन करता है। वह यह सब इसलिये करता है, क्योंकि वह मानता है 'मैं मुनि हूँ' और शास्त्रों में मुनियों का आचरण ऐसा होना चाहिये, इसप्रकार लिखा है, इसलिये वह ऐसा आचरण करता है।

दूसरा गृहस्थ है। वह ऐसा मानता है कि मैं गृहस्थ हूँ और मैं पाँच पापों का सेवन कर सकता हूँ। मैं हिंसा कर सकता हूँ, मैं स्थूल असत्य बोल सकता हूँ, मैं शादी कर सकता हूँ, मैं परिग्रह जोड़ सकता हूँ, मैं चोरी भी कर सकता हूँ, क्योंकि मैं इनका त्यागी नहीं हूँ, मैं तो गृहस्थ हूँ। इसप्रकार गृहस्थ के लिये शूद्र के घर में पले पुत्र का उदाहरण दिया है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. दाहोद निवासी श्री कांतिलाल छगनलाल गांधी का दिनांक 20 दिसम्बर 2001 को देहावसान हो गया है। आप पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में प्रतिवर्ष 2-3 महिने सोनगढ़ रहकर लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में आपके पुत्र श्री सुरेशचंद गांधी की ओर से जैनपथप्रदर्शक को 151/- रुपये तथा साहित्य की कीमत कम करने में 1001/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद!

2. वांकानेर निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री रविचंदभाई उमेदचंद शेठ का दिनांक 19 दिसम्बर 2001 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी एवं शान्त परिणामी थे। आपने अनेक वर्षों तक सोनगढ़ जाकर पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

अजमेर : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट युवा प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक आध्यात्मिक बाल व युवा चेतना शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। उद्घाटन श्री मिलापचन्दजी बड़जात्या ने किया।

शिविर में पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर, पं. देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया एवं पं. सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल द्वारा बालबोध पाठमाला तथा मोक्षमार्गप्रकाशक पर कक्षायें संचालित की गईं। पण्डित देवेन्द्रकुमारजी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन होते थे।

150 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, अन्तिम दिन पुरस्कार वितरण किया गया।

विधान एवं स्वाध्याय भवन का उद्घाटन

सागर : यहाँ दिनांक 23 से 25 तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम एवं पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर दिनांक 25 दिसम्बर को मुमुक्षु समाज द्वारा रामपुरा वार्ड में बनाये गये श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्रीमंत सेठ डालचंदजी (पूर्व सांसद) की अध्यक्षता में श्रीमान राजकुमारजी जैन कर्रापुरवालों के परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पं. राजेन्द्रजी जबलपुर, पं. कोमलचन्दजी टड़ा, पं. अरुणकुमारजी मोदी मकरोनिया एवं स्थानीय विद्वानों के तीनों समय प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मुमुक्षु समाज ने लिया।

प्रमोद जैन पुरस्कृत

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के होनहार छात्र एवं श्री दिग.जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में अध्ययनरत श्री प्रमोद जैन शास्त्री, शाहगढ़ ने राज्यस्तरीय संस्कृत अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम, राज्यस्तरीय समस्यापूर्ति प्रतियोगिता में द्वितीय एवं World peace can be achieved only by Sanskrit विषयक राज्यस्तरीय अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। एतदर्थ उन्हें महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

हार्दिक बधाई !

पण्डित टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्र जिनेन्द्रकुमार को राजस्थान संस्कृत विद्यार्थी परिषद के जयपुर सम्भाग प्रमुखपद पर मनोनीत किया गया; एतदर्थ महाविद्यालय परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई!

पुरुलिया में डेढ़ हजार साल पुरानी

मूर्तियों-मंदिरों के अवशेष मिले

पुरुलिया - पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिला अंतर्गत अगयानर्रा अंचल स्थित कुसटाईड गाँव में गत 19 अगस्त को की गई खुदाई के क्रम में भगवान महावीर समेत कई मूर्तियाँ, कलशों तथा मंदिरों के पौराणिक ध्वंसावशेष प्राप्त हुये हैं। सभी मूर्तियाँ पत्थरों को गढ़कर बनायी गयी हैं। कलश, चाक तथा मंदिर भी पत्थर के ही बने हुए हैं। मूर्तियों तथा अन्य ध्वंसावशेषों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त स्थान पर कभी जैनियों की बस्तियाँ तथा मंदिर थे। अनुमान के तौर पर उक्त अवशेष छठी शताब्दी के आसपास के लगते हैं। जब मूर्ति निर्माण कला विकसित हो चुकी थी। खुदाई में निकले अद्भुत ध्वंसावशेषों को देखने के लिए पुरुलिया, बोकारो, हजारीबाग, कोलकाता, गिरिडीह समेत दूर दराज के लोगों का आना-जाना लगा हुआ है। दूसरी ओर पूजा, अर्चना, चढ़ावा आदि भी लगातार जारी है।

उक्त अवशेष कितना पुराना तथा किस काल का है ? इस संबंध में कुछ कहना मुश्किल है।

खुदाई के क्रम में महावीर भगवान की चौंतीस इंच की एक सिरविहीन मूर्ति, साढ़े चौबीस इंच ऊंचा काले रंग का एक अद्भुत कलश, साढ़े तेरह तथा बीस इंच ऊंचे दो अन्य कलश, तीनों कलशों के ऊपर पत्थर के ही पत्ते बने हुए हैं।

सभी अवशेष जमीन के नीचे अवस्थित मंदिर के कमरों में थे। खुदाई के क्रम में लोगों ने एक-एक करके उन्हें बाहर निकाल कर रख दिया है।

तीनों बड़े तथा एक छोटे कमरे में विभक्त उक्त मंदिर चौकस पत्थरों से बना था, जिसकी दीवालों की चौड़ाई लगभग ढ़ाई फुट है। पास-पास सटे दोनों कमरों की लम्बाई चौड़ाई लगभग 8-8फुट है, जबकि बड़ा कमरा 12-12 फुट का है। मंदिर के पश्चिम की ओर उसका ढाई फुट चौड़ा मुख्य दरवाजा है। मंदिर के निर्माण में सीमेंट बालू का उपयोग ही नहीं हुआ है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **जनवरी (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/01**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर